विवरण—2

राजस्थान में सामाजिक वानिकी के संबंध में वास्तविक एवं वित्तीय उपलब्धियां

क्रम सं.	वर्ष	खर्च की गई राशि (लाख रुपयों में)	वृक्ष लगाया गया क्षेत्र (हेक्टेयर में)
1.	1984–85	1,880.00	57,647.00
2.	1985–86	1,536.80	47,900.00
3.	1986–87	3,376.13	67,051.00
4.	1987–88	2,847.84	58,693.00
5.	1988–89	3,202.00	65,500.00–
	कुल:	12,842.77	296,791.00

देश में वर्षा के संबंध में भविष्यवाणी

941. **डा० अबरार अहमद खान :** क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) (i) क्या इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हमारे देश में कृषि और उद्योग मुख्यत: वर्षा पर निर्भर करते हैं, वर्षा से पूर्व उसकी भविष्यवाणी करने के लिए देश में कोई शोध-कार्य किया गया है; (ii) यदि हां, तो क्या वर्षा या बादलों को एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर मोड़ा/स्थानान्तरित किया जा सकता है और बादलों की दिशा को सूखा प्रभावित क्षेत्रों की ओर मोड़ा जा सकता है ;

(ख) आगामी वर्षा के होने से कितने समय पूर्व किसान को वर्षा के बारे में बताया जा सकता है और क्या आगामी वर्षा की मात्रा को बढ़ाया या घटाया जा सकता है; और

(ग) सरकार द्वारा वर्षा की भविष्यवाणी से संबंधित शोध कार्य पर देश में प्रतिवर्ष कितना खर्च किया जा रहा है ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री साथ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा विभाग में राज्य मंत्री का अतिरिक्त प्रभार (प्रो० एम० जी० के० मेनन) : (क) (i) जी हां ।

(ii) जी नहीं ।

(ख) मौसम वैज्ञानिक उपमंडलों अथवा जिलों के समूहों के लिए दो दिन पूर्व भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा वर्षा पूर्वानुमान किए जाते हैं तथापि, देश के लिए समग्र रूप से दक्षिण-पश्चिमी मानसून मौसम हेतु मौसमी वर्षा के लिए दीर्घावधि पूर्वानुमान सामान्यत: प्रतिवर्ष मई में किया जाता है ।

यद्यपि आगामी वर्षा की मात्रा को घटाया नहीं जा सकता तथापि वैज्ञानिक परीक्षणों ने दर्शाया है कि कुछ वायुमंडलीय अवस्थाओं के अन्तर्गत जबकि अपेक्षित प्रकार के बादल पहले ही उपलब्ध हों, आगामी वर्षा को सीमित क्षेत्रों में कुछ मात्रा में बढ़ाया जा सकता है ।

(ग) विभिन्न सरकारी अभिकरणों के द्वारा मौसम विज्ञान संबंधी अनुसंधान

कार्य पर सरकार द्वारा किए गये वार्षिक व्यय की राशि 1989-90 में लगभग 8.0 करोड़ रुपए थी।

राजस्थान में परमाणु विद्युत संयंत्र

942. **डा० अबरार अहमद खान :** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राजस्थान में वर्तमान में कौन-कौन से परमाणु विद्युत संयंत्र हैं तथा उनकी कितनी क्षमता है और उनके द्वारा कितनी विद्युत उत्पादित की जा रही है ;

(ख) पिछले दो वर्षों के दौरान कौन-कौन से संयंत्र बन्द रहे, वे कितने दिनों तक बन्द रहे और इसके कारण क्या हैं ;

(ग) क्या आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राज्य में कोई नये परमाणु विद्युत संयंत्र स्थापित किए जाने का विचार है ; यदि हां, तो किन-किन स्थानों पर और उनकी क्षमता कितनी-कितनी होगी ;

(घ) परमाणु विद्युत के उत्पादन पर देश में कितना धन खर्च किया जा रहा है, उन के द्वारा प्रतिवर्ष कितनी मात्रा में विद्युत का उत्पादन किया जा रहा है और इस संबंध में राजस्थान का ब्यौरा क्या है ;

(ङ) क्या परमाणु विद्युत संयंत्रों का पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ; यदि हां, तो उसे दूर करने के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री साथ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा विभाग में राज्य मंत्री का अतिरिक्त प्रभार (प्रो० एम० जी० के० मेनन) : (क) दो यूनिट, जो राजस्थान परमाणु बिजलीघर (राजस्थान परमाणु बिजलीघर 1 तथा 2) के नाम से जाने जाते हैं और जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 220 मेगावाट है, इस समय चालू हैं। इन दोनों यूनिटों ने वर्ष 1988 में कुल मिलाकर 1868 मिलियन किलोवाट घन्टे (मिलियन यूनिट) और वर्ष 1989 में 1609 मिलियन यूनिट बिजली पैदा की है।

(ख) राजस्थान में, पिछले दो वर्षों में, अर्थात 1988 और 1989 में राजस्थान परमाणु बिजलीघर का पहला और दूसरा यूनिट काम करते रहे। नीचे यह बताया जा रहा है कि पिछले दो वर्षों में ये यूनिट कितने दिन और किन कारणों से बन्द रहे :—

यूनिट	वर्ष	यूनिट कितने दिन बंद रहा	कारण
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-I	1988	125	15 बार मजबूरन और 4 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-I	1989	166	10 बार मजबूरन और 1 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-II	1988	35	11 बार मजबूरन और 4 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।
राजस्थान परमाणु बिजलीघर-III	1989	75	7 बार मजबूरन और 1 बार निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार।